श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं कौपीनपञ्चकं

श्री कृष्णायन सेवासदन पलवल, हरियाणा

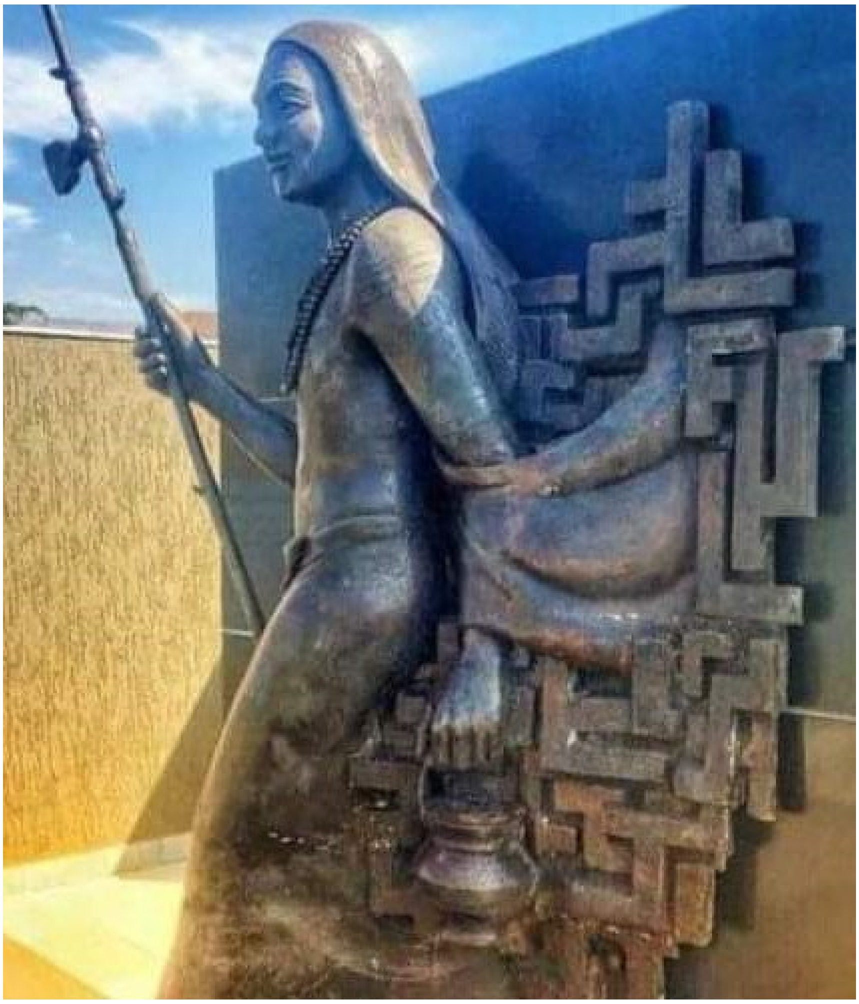

वेदान्तवाक्येषु सदा रमन्तो भिक्षान्नमात्रेण च तुष्टिमन्तः |

अशोकवन्तः करुणैकवन्तः कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः ||1||

सदैव उपनिषद्-वाक्यों में रमते हुए, भिक्षा के अन्नमात्र में ही सन्तोष रखते हुए, शोकरहित तथा दयावान्, कौपीन धारण करने वाले ही भाग्यवान् हैं |

मूलं तरोः केवलमाश्रयन्तः पाणिद्वये भोक्तुममत्रयन्तः |कन्थामपि स्त्रीमिव कुत्सयन्तः कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः ||2||

केवल वृक्षतलों में रहने वाले, दोनों हाथों को ही भोजनपात्र बनाने वाले, गुदड़ी को भी स्त्री की भांति तुच्छ बुद्धि से देखने वाले कौपीनधारी ही भाग्यवान् हैं |

देहाभिमानं परिहृत्य दूरादात्मानमात्मन्यवलोकयन्तः |

अहर्निशं ब्रह्मणि ये रमन्तः कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः ||3||

देहाभिमान को दूर से ही छोड़कर, अपनी आत्मा को अपने में ही देखते हुए रात-दिन ब्रह्मा में रमण करने वाले कौपीनधारी ही भाग्यवान् हैं |

स्वानन्दभावे परितुष्टिमन्तः स्वशान्तसर्वेन्द्रियवृत्तिमन्तः |

नान्तं न मध्यं न बहिः स्मरन्तः कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः ||4||

आत्मानन्द में ही सन्तुष्ट रहने वाले, अपने भीतर ही सारी इन्द्रियों की वृत्तियाँ शान्त कर लेने वाले, अन्त, मध्य और बाहर की स्मृति से शून्य रहने वाले कौपीनधारी ही भाग्यवान् हैं |

पञ्चाक्षरं पावनमुच्चरन्तः पतिं पशूनां हृदि भावयन्तः |

भिक्षाशना दिक्षु परिभ्रमन्तः कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः ||5||

पवित्र पञ्चाक्षरमन्त्र {नमः शिवाय}का जप करते हुए, हृदयमें परमेश्वर की भावना करते तथा भिक्षाका भोजन करते हुए सब दिशाओंमें विचरने वाले कौपीनधारी ही भाग्यवान् हैं |

{इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं कौपीनपञ्चकं सम्पूर्णम् ||}